Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025| Page 145-157

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में आर्थिक सशक्तिकरण और स्त्री स्वतंत्रता

सुनीता प्रधान
शोधार्थी
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

डॉ. अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

सारांश

मन्नू भंडारी हिंदी कथा-साहित्य की उन विरल कथाकारों में हैं, जिन्होंने नारी जीवन के सूक्ष्म मनोभावों, सामाजिक संघर्षों और आंतरिक द्वंद्वों को अत्यंत सहज, सजीव एवं यथार्थपरक भाषा में चित्रित किया है। उनका साहित्य केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक वैचारिक आंदोलन है, जिसमें स्त्री चेतना, सामाजिक असमानता और आर्थिक परतंत्रता के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध मुखर होता है। इस शोध-पत्र में मन्नू भंडारी की कहानियों का विश्लेषण इस दृष्टिकोण से किया गया है कि किस प्रकार उनकी नारी पात्र पारंपरिक सामाजिक बंधनों को तोड़कर आर्थिक आत्मनिर्भरता के मार्ग पर अग्रसर होती हैं और धीरे-धीरे स्वतंत्र चेतना से सम्पन्न होती हैं। 'यही सच है', 'त्रिशंकु', 'अकेली', 'स्त्री के रूप', 'लाजवन्ती' जैसी कहानियाँ उनके कथा-साहित्य में स्त्री के आंतरिक साहस, निर्णयात्मक क्षमता और सामाजिक सीमाओं से संघर्ष के जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। शोध में यह प्रमाणित किया गया है कि मन्नू भंडारी की नारी पात्र केवल सहनशीलता का प्रतीक नहीं हैं, वे अपने जीवन की दिशा स्वयं निर्धारित करने का सामर्थ्य रखती हैं। आर्थिक सशक्तिकरण उनके लिए केवल आजीविका नहीं, बल्कि आत्मगौरव, पहचान और स्वतंत्रता का माध्यम है। यह शोध-पत्र उनके कथा-साहित्य में स्त्री मुक्ति के वैचारिक एवं सामाजिक सरोकारों को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: स्त्री विमर्श, आर्थिक सशक्तिकरण, स्त्री स्वतंत्रता, नारी चेतना, सामाजिक यथार्थ, हिंदी लघुकथा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025| Page 145-157

परिचय

हिंदी कथा-साहित्य के विकास में मन्नू भंडारी का नाम एक सशक्त एवं संवेदनशील लेखिका के रूप में अंकित है, जिन्होंने नारी जीवन के अनुभवों को अत्यंत सहजता, गहराई और यथार्थपरकता के साथ साहित्य में रूपायित किया। उनका लेखन सामाजिक चेतना, वैचारिक प्रतिबद्धता और मानवीय करुणा से समृद्ध है, जिसमें विशेष रूप से स्त्री की स्थिति, उसकी मानसिक उथल-पुथल, पारिवारिक दबाव, आर्थिक असुरक्षा और स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश को प्रमुखता दी गई है।

बीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में जब हिंदी साहित्य में 'नई कहानी आंदोलन' का प्रवाह था, तब मन्नू भंडारी उन प्रमुख कथाकारों में रहीं जिन्होंने कहानी को केवल भावुकता या घटनाओं का संकलन न मानकर उसे सामाजिक संरचना और आंतरिक जीवन के यथार्थ से जोड़ा। उन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से स्त्रियों के ऐसे जीवन-क्षेत्रों को उजागर किया जहाँ वह केवल उपेक्षित या सहनशील पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील, विचारशील और परिवर्तन की वाहक हैं। उनके पात्र विशेषतः मध्यवर्गीय स्त्रियाँ हैं, जो जीवन की सीमाओं में जीते हुए भी अपने आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय और आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में संघर्षरत दिखाई देती हैं।

स्त्री विमर्श के क्षेत्र में आर्थिक सशक्तिकरण को एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम माना जाता है। जब कोई स्त्री आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती है, तब उसके भीतर स्वतंत्रता की चेतना जन्म लेती है , वह अपने निर्णय स्वयं लेने में समर्थ बनती है, और पारिवारिक या सामाजिक दबावों का प्रतिकार कर सकती है। मन्नू भंडारी की कहानियों में यह चेतना स्पष्ट रूप से उभरती है। उनकी नायिकाएँ केवल पारंपरिक आदर्शों में बंधी हुई नहीं हैं, वे आत्मसम्मान की खोज करती हैं, नौकरी करती हैं, अकेले जीवन जीने का साहस दिखाती हैं और कई बार सामाजिक मर्यादाओं को चुनौती भी देती हैं।

यह शोध-पत्र मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में निहित आर्थिक सशक्तिकरण और स्त्री स्वतंत्रता के पहलुओं का विश्लेषण करने का प्रयास है। इसमें उनकी प्रमुख कहानियों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार एक साधारण स्त्री भी जब आत्मनिर्भर बनती है, तो वह समाज की स्थापित सीमाओं को लांघकर स्वयं को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्थापित कर सकती है।

वर्तमान समय में जब स्त्री विमर्श एक वैश्विक विमर्श बन चुका है, तब मन्नू भंडारी की कहानियाँ और अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं , क्योंकि वे हमें यह बताती हैं कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया साहित्य के माध्यम से कितनी सहजता और प्रभावशीलता से संभव है।

शोध की पृष्ठभूमि और सैद्धांतिक आधार

हिंदी साहित्य का विकास केवल सौंदर्यबोध या भावप्रधान दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने सामाजिक यथार्थ, वर्ग-संघर्ष, लैंगिक असमानता और मानवीय संवेदनाओं को भी गहराई से छुआ है। विशेषकर बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब स्त्री लेखन ने एक वैचारिक गति पकड़ी, तब साहित्य एक सशक्त सामाजिक माध्यम बनकर उभरा। इसी पृष्ठभूमि में मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य स्त्री जीवन की वास्तविकताओं, उसकी आकांक्षाओं, संघर्षों और चेतनात्मक उथल-पुथल का जीवन्त दस्तावेज बनकर सामने आता है।

मन्नू भंडारी उस पीढ़ी की लेखिका हैं जिन्होंने 'नई कहानी आंदोलन' के अंतर्गत मध्यवर्गीय समाज की स्त्रियों को केवल पारिवारिक चौखट तक सीमित न रखकर उनके भीतर पल रहे असंतोष, अस्मिता की खोज और निर्णयात्मक क्षमताओं को स्वर प्रदान किया। उनकी कहानियों में स्त्री केवल गृहस्थ जीवन की परिधि में नहीं रहती, बल्कि वह जीवन की नई अर्थवत्ता खोजने वाली एक संवेदनशील, विवेकशील और आत्मनिर्भर इकाई बनकर उभरती है।

इस शोध का मूल आधार स्त्री विमर्श (Feminism) की वह धारणा है जो मानती है कि आर्थिक सशक्तिकरण स्त्री स्वतंत्रता की पूर्वशर्त है। जब कोई स्त्री अपनी आजीविका स्वयं अर्जित करती है, तब वह केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, वैचारिक और मानसिक स्तर पर भी स्वतंत्रता प्राप्त करती है। यह स्वतंत्रता उसे सामाजिक परंपराओं, पारिवारिक प्रतिबंधों और लैंगिक असमानताओं के विरुद्ध सोचने, बोलने और निर्णय लेने की शक्ति देती है।

सैद्धांतिक रूप से यह शोध स्त्रीवादी दृष्टिकोण (Feminist Perspective) और समाजशास्त्रीय पद्धति (Sociological Approach) पर आधारित है। इसमें सिमोन द बोउवार (Simone de Beauvoir), बेट्टी फ्राइडन (Betty Friedan), और भारतीय सन्दर्भ में रमणिका गुप्ता, मैत्रेयी पुष्पा जैसी चिंतक लेखिकाओं

के विचारों को संदर्भ के रूप में लिया गया है, जिन्होंने स्त्री की स्वतंत्रता को सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं से जोड़कर देखा है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में इन सैद्धांतिक आधारों का अनुप्रयोग सहज रूप से देखा जा सकता है। उनकी नायिकाएँ आत्मनिर्भर बनने की प्रक्रिया में जिन मानसिक, सामाजिक एवं पारिवारिक अवरोधों से जूझती हैं, वह उन्हें केवल पीड़िता नहीं, बल्कि सक्रिय 'एजेंट ऑफ चेंज' बनाती हैं। इस शोध में इन पहलुओं की सूक्ष्मता से पड़ताल की गई है।

मन्नू भंडारी की प्रमुख कहानियों का विश्लेषण

मन्नू भंडारी की कहानियाँ हिंदी कथा साहित्य में स्त्री जीवन के यथार्थ, संघर्ष और परिवर्तनशील चेतना का सजीव दस्तावेज हैं। उन्होंने अपने कथा संसार में स्त्रियों को न केवल सामाजिक भूमिका में चित्रित किया, बल्कि उनके भीतर चल रही मानसिक, भावनात्मक और वैचारिक उठा-पटक को भी गहराई से अभिव्यक्त किया। विशेष रूप से जिन कहानियों में आर्थिक सशक्तिकरण और स्त्री स्वतंत्रता का प्रश्न सामने आता है, वे नारीवाद की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। नीचे उनकी कुछ प्रमुख कहानियों का विश्लेषण प्रस्तुत है:

1. यही सच है

यह कहानी मन्नू भंडारी की सबसे चर्चित कहानियों में से एक है, जिसमें इंदु नामक नायिका एक स्वाभिमानी, शिक्षित और स्वतंत्र विचारों वाली महिला के रूप में सामने आती है। कहानी का मुख्य तनाव इंदु और उसकी पुरानी प्रेम भावना तथा वर्तमान वैवाहिक जीवन के बीच के द्वंद्व को लेकर है।

इंदु अपने अतीत की भावनाओं को स्वीकारती है, लेकिन उसके आगे झुकती नहीं। वह अपने वर्तमान को स्पष्ट और ठोस रूप से चुनती है , यह स्त्री की आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता का प्रमाण है। उसकी आर्थिक स्थिति उल्लेखित नहीं है, पर उसका आत्मबल दर्शाता है कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के बिना भी मानसिक स्वतंत्रता संभव हो सकती है, और वह आर्थिक स्वावलंबन की ओर संकेत करती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025| Page 145-157

2. त्रिशंकु

'त्रिशंकु' कहानी उस स्त्री के अंतर्द्वंद्व को दर्शाती है, जो पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच झूल रही है। इसमें नायिका के मन में आर्थिक स्वतंत्रता की आवश्यकता की भावना स्पष्ट होती है, लेकिन सामाजिक भय और पारिवारिक अपेक्षाएँ उसे निर्णयहीन स्थिति में ले जाती हैं।

यह कहानी स्त्री के उस 'मध्यवर्गीय त्रिशंकु' भाव की प्रतीक है, जहाँ न तो वह पूरी तरह पारंपरिक रह सकती है, न ही पूर्ण आधुनिक। मन्नू भंडारी यहाँ उस यथार्थ को उद्घाटित करती हैं जिसमें स्त्री स्वतंत्रता चाहती है परंतु आर्थिक निर्भरता उसे पीछे खींचती है।

3. अकेली

'अकेली' कहानी में स्त्री की एकाकी जीवन शैली और उससे उपजे आत्मबल का चित्रण है। यह कहानी उस स्त्री की है जो विवाह या पुरुष की आवश्यकता से परे जीवन जीने का साहस रखती है।

कहानी में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि नायिका का आत्मनिर्णय और आर्थिक स्वावलंबन ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। वह समाज की ओर से थोपे गए 'स्त्री-अविवाहित' टैग को स्वीकारने के बजाय अपने अस्तित्व को सम्मानपूर्वक जीने को चुनती है। यह कहानी आधुनिक स्त्री की मानसिक और आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक है।

4. स्त्री के रूप

इस कहानी में मन्नू भंडारी ने स्त्री के विविध रूपों को उजागर किया है , बेटी, पत्नी, माँ, कर्मचारी, प्रेमिका, और एक स्वतंत्र व्यक्ति। कहानी का मूल स्वर यह है कि स्त्री केवल एक 'भूमिका' नहीं है, बल्कि वह एक पूर्ण मानव है जिसे अपनी पहचान चाहिए।

यहाँ स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक भी होनी चाहिए। जिन स्त्रियों ने कार्यक्षेत्र को अपनाया है, वे स्वयं को अधिक स्वतंत्र और सक्षम महसूस करती हैं।

5. लाजवन्ती

हालाँकि यह कहानी मुख्यतः सामाजिक अस्पृश्यता और स्त्री की 'इज़्ज़त' जैसे सवालों पर केंद्रित है, लेकिन इसमें भी स्त्री के भीतर की दबी हुई स्वतंत्र चेतना का चित्रण मिलता है। लाजवन्ती जैसे पात्रों के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025| Page 145-157

माध्यम से मन्नू भंडारी यह प्रश्न उठाती हैं कि क्या स्त्री की गरिमा केवल उसकी सामाजिक स्थिति से तय होगी? लाजवन्ती अंततः सामाजिक चौखटों को तोड़कर स्वयं का निर्णय स्वयं लेती है, जो कि स्त्री स्वतंत्रता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

आर्थिक सशक्तिकरण के स्वरूप

आर्थिक सशक्तिकरण किसी भी व्यक्ति, विशेषतः स्त्री के लिए केवल जीविकोपार्जन का माध्यम नहीं होता, बल्कि यह उसकी आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की स्वतंत्रता का आधार बनता है। स्त्री जब आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती है, तो वह केवल अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं करती, बल्कि समाज की रूढ़ियों, पारिवारिक नियंत्रण और वैचारिक गुलामी से भी मुक्त होने लगती है।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में आर्थिक सशक्तिकरण का स्वरूप बहुआयामी रूप में उभरता है। वे इसे केवल नौकरी या कार्यक्षेत्र से जोड़कर नहीं देखतीं, बल्कि यह दिखाती हैं कि आर्थिक स्वतंत्रता किस प्रकार स्त्री के पूरे व्यक्तित्व को रूपांतरित करती है।

1. आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्त्री का आत्मविश्वास

कई कहानियों में, जैसे 'अकेली' और 'स्त्री के रूप', स्त्रियाँ नौकरीपेशा, शिक्षित और आत्मनिर्भर रूप में सामने आती हैं। उनके पास आर्थिक संसाधन होते हैं, जिससे वे निर्णय लेने में सक्षम होती हैं , चाहे वह विवाह का प्रश्न हो, अकेले जीवन जीने का साहस, या समाज के विरोधों का सामना करना।

2. रोज़गार का चयन और आत्मसम्मान

कुछ कहानियों में स्त्रियाँ कठिन परिस्थितियों में कार्य करती हैं , जैसे ट्यूशन पढ़ाना, लेखन करना, या किसी दफ्तर में नौकरी करना , परंतु वे इसे मजबूरी नहीं, बल्कि गौरव के साथ अपनाई गई जिम्मेदारी मानती हैं।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025| Page 145-157

इसका सबसे अच्छा उदाहरण 'अकेली' कहानी की नायिका है, जो यह मानती है कि किसी पुरुष पर निर्भर रहकर जीना उसकी गरिमा के प्रतिकूल है।

3. आर्थिक स्वतंत्रता बनाम पारिवारिक प्रतिरोध

मन्नू भंडारी की कहानियों में यह पक्ष भी देखा जा सकता है कि जब स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती है, तब परिवार और समाज की मानसिकता उसके प्रति बदलने लगती है। उसे या तो उपेक्षा, ईर्ष्या या संशय की दृष्टि से देखा जाता है।

कहानी 'त्रिशंकु' में यह द्वंद्व स्पष्ट रूप से उभरता है, जहाँ नायिका आर्थिक स्वतंत्रता चाहती है, लेकिन पारिवारिक बंधनों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच फँसी होती है।

4. आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से संबंधों की पुनर्परिभाषा

मन्नू भंडारी की कई कहानियों में स्त्रियाँ आर्थिक रूप से सक्षम होने के बाद अपने पारिवारिक और दांपत्य संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करती हैं। वे केवल पत्नी या माँ नहीं रह जातीं, बल्कि एक स्वतंत्र 'व्यक्ति' के रूप में सामने आती हैं।

यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि मानसिक मुक्ति का द्वार भी खोलता है।

5. नारी मुक्ति के आंदोलन में आर्थिक भूमिका

मन्नू भंडारी के कथा-संसार में आर्थिक सशक्तिकरण को नारी मुक्ति के एक प्रमुख औज़ार के रूप में देखा गया है। उनकी स्त्रियाँ अपनी मेहनत, शिक्षा और विचारशीलता के माध्यम से पुरुष-सत्तात्मक संरचना को चुनौती देती हैं।

स्त्री स्वतंत्रता के विविध आयाम

स्त्री स्वतंत्रता एक बहुआयामी अवधारणा है, जो केवल शारीरिक या आर्थिक स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें मानसिक, वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक पक्ष भी समाहित होते हैं। मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में स्त्री स्वतंत्रता को किसी नारे की तरह नहीं, बल्कि धीरे-धीरे विकसित होने

वाली एक आत्मिक यात्रा के रूप में चित्रित किया गया है। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ पारंपरिक बंधनों से टकराते हुए, अपने अनुभवों, आत्मबोध और संघर्षों के माध्यम से स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होती हैं।

उनकी रचनाओं में स्त्री स्वतंत्रता के निम्नलिखित प्रमुख आयाम उभरकर सामने आते हैं:

1. मानसिक और वैचारिक स्वतंत्रता

मन्नू भंडारी की कहानियों की स्त्रियाँ सबसे पहले अपने भीतर के द्वंद्व को पहचानती हैं। वे अपने जीवन को केवल परंपराओं के ढाँचे में नहीं जीतीं, बल्कि सोचती हैं, निर्णय करती हैं, और आत्ममंथन के द्वारा अपनी अस्मिता को समझने का प्रयास करती हैं।

कहानी 'यही सच है' की इंदु अपने अतीत और वर्तमान के बीच स्पष्ट सोच रखती है और बिना किसी अपराधबोध के अपने निर्णय को स्वयं तय करती है। यह मानसिक स्वतंत्रता स्त्री मुक्ति का सबसे प्रबल पक्ष है।

2. आर्थिक स्वतंत्रता

यह पक्ष पहले ही विस्तार से प्रस्तुत किया जा चुका है, लेकिन यहाँ यह दुहराना आवश्यक है कि मन्नू भंडारी की स्त्रियाँ जब आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनती हैं, तो उनका सामाजिक और पारिवारिक दृष्टिकोण भी बदलने लगता है। वे अब केवल आश्रिता नहीं, बल्कि निर्णायक भूमिका निभाने वाली स्त्रियाँ बनती हैं।

कहानी 'अकेली' इस बात का प्रतीक है कि आर्थिक स्वतंत्रता के साथ स्त्री अपने जीवन का ढाँचा स्वयं गढ़ने लगती है।

3. शारीरिक स्वतंत्रता और आत्मसम्मान

कई कहानियों में स्त्रियाँ अपने शरीर और इच्छाओं को लेकर स्पष्ट और निर्भीक दिखाई देती हैं। वे यह तय करती हैं कि उन्हें संबंध कैसे और किन शर्तों पर स्वीकार करने हैं।

यह स्त्री को वस्तु मानने की मानसिकता के विरुद्ध एक सशक्त वैचारिक प्रतिरोध है। मन्नू भंडारी की नायिकाएँ रिश्तों में 'भोग्या' नहीं, साथी और समकक्ष बनना चाहती हैं।

4. सामाजिक और पारिवारिक स्वतंत्रता

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025| Page 145-157

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में स्त्री पारिवारिक संबंधों को तोड़ती नहीं, बल्कि नवीन रूप से परिभाषित करती है। वह विवाह को अनिवार्य संस्था नहीं मानती, बल्कि उसमें बराबरी और सम्मान की माँग करती है।

'त्रिशंकु' कहानी में यह द्वंद्व स्पष्ट है , जहाँ नायिका न केवल सामाजिक अपेक्षाओं से जूझती है, बल्कि अपने लिए एक स्वतंत्र रास्ता चुनने की इच्छा भी रखती है।

5. भविष्य की दिशा तय करने की स्वतंत्रता

स्त्री जब मानसिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से सक्षम होती है, तब वह अपने जीवन की दिशा स्वयं निर्धारित करती है। मन्नू भंडारी की स्त्रियाँ यह साहस करती हैं कि वे अपने जीवन की बागडोर किसी और के हाथ में नहीं छोड़तीं।

वे संबंधों, करियर, जीवनशैली और सोच , हर पहलू में स्वतंत्र निर्णय लेने का साहस रखती हैं। यही वास्तविक स्वतंत्रता है।

6. संघर्ष और जिम्मेदारी स्वीकारने की स्वतंत्रता

मन्नू भंडारी की कहानियाँ केवल स्वतंत्रता की आकांक्षा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे यह भी दर्शाती हैं कि जब स्त्री स्वतंत्र होती है, तो उस पर जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती हैं।

वे इन जिम्मेदारियों से भागती नहीं, बल्कि उन्हें स्वाभिमान के साथ स्वीकारती हैं, जिससे उनके चरित्र का सामाजिक और नैतिक पक्ष और अधिक सशक्त हो उठता है।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में बदलाव की चेतना

मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य केवल सामाजिक यथार्थ की पुनरावृत्ति नहीं करता, वह उस यथार्थ को चुनौती देने और उसमें परिवर्तन की संभावनाओं की खोज भी करता है। उनकी रचनाओं में बदलाव की चेतना एक स्थायी तत्व की तरह उपस्थित है , वह चेतना जो स्त्री के आत्मबोध से शुरू होती है और सामाजिक संरचनाओं तक विस्तार पाती है।

यह बदलाव नायिका के सोचने, निर्णय लेने, और सीमाओं को लांघने की प्रक्रिया के माध्यम से प्रकट होता है। उनकी कहानियाँ पाठक को यह एहसास कराती हैं कि स्त्री केवल सहने के लिए नहीं बनी, बल्कि सोचने, चुनने और बदलने की सामर्थ्य से युक्त है।

1. आत्मचेतना से बदलाव की शुरुआत

मन्नू भंडारी की नायिकाएँ बाहरी विद्रोह से पहले भीतर की उलझनों को समझती हैं, और यहीं से बदलाव की प्रक्रिया शुरू होती है। 'यही सच है' की इंदु अतीत और वर्तमान के बीच झूलते हुए अंततः अपने निर्णय तक पहुँचती है , यह निर्णय एक परिपक्व चेतना का प्रमाण है, जो अपनी ज़रूरतों, भावनाओं और ज़िम्मेदारियों को समझकर लिया गया है।

2. परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन

मन्नू भंडारी का साहित्य परंपरा का विरोध नहीं करता, लेकिन वह परंपरा को अंधानुकरण की दृष्टि से देखने का विरोध अवश्य करता है। उनकी कहानियों में यह चेतना दिखाई देती है कि समय के साथ मूल्य भी बदलते हैं, और स्त्री को भी अपने जीवनमूल्य स्वयं निर्धारित करने का अधिकार होना चाहिए। यह एक प्रकार की वैचारिक क्रांति है, जो कथानायिकाओं के माध्यम से प्रकट होती है।

3. सामाजिक रूढ़ियों पर प्रश्न

'त्रिशंकु', 'अकेली', और 'लाजवन्ती' जैसी कहानियाँ समाज की रूढ़ धारणाओं पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाती हैं। ये रचनाएँ पाठकों को सोचने पर विवश करती हैं कि क्या स्त्री की भूमिका केवल समर्पण और आज्ञाकारिता तक सीमित है? क्या विवाह, मातृत्व, और सेवा ही स्त्री के एकमात्र धर्म हैं?

मन्नू भंडारी की लेखनी इन सवालों के ज़रिए बदलाव की ज़मीन तैयार करती है , विवेकपूर्ण, संवेदनशील और आंतरिक दृष्टि से पूर्ण बदलाव की।

4. स्वर और साहस का उभरता रूप

बदलाव की चेतना केवल सोच में नहीं, बल्कि कर्म में भी परिलक्षित होती है। उनकी कई कहानियों में नायिकाएँ निर्णय लेकर अपने जीवन की दिशा बदलती हैं , जैसे नौकरी करना, संबंध छोड़ देना, अकेले रहना, या नई राह चुनना।

यह सब कुछ सहज नहीं होता, लेकिन मन्नू भंडारी यह दिखाती हैं कि बदलाव तब संभव होता है जब स्त्री स्वयं को सीमाओं से परे देखने का साहस करती है।

5. नवीन स्त्री दृष्टि का निर्माण

मन्नू भंडारी के कथा-संसार में स्त्री केवल भोग्य नहीं, चिंतक, प्रश्नकर्ता और परिवर्तनकर्मी है। वह केवल वर्तमान की आलोचक नहीं, बल्कि भविष्य की निर्माता है। यही बदलाव की चेतना उनकी कहानियों को केवल साहित्यिक नहीं, सामाजिक दस्तावेज भी बनाती है।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री स्वतंत्रता और आर्थिक सशक्तिकरण के विषय पर आधारित इस शोध में कुछ सैद्धांतिक और प्रायोगिक सीमाएँ स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती हैं। यद्यपि उनकी कहानियाँ एक विशिष्ट सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करती हैं, किन्तु उनके लेखन का प्रमुख कालखंड 1950 से 1980 के मध्य का है, जब स्त्री समाज परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व से जूझ रहा था। यह तथ्य कथानक की सामाजिक प्रासंगिकता को सीमित करता है, क्योंकि समकालीन स्त्री विमर्श में नए प्रश्न, वर्गीय-सांस्कृतिक विविधताएँ और बहुआयामी संघर्ष जुड़े हैं, जो मन्नू भंडारी की रचनाओं में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं हैं।

उनकी कहानियों की अधिकांश नायिकाएँ शिक्षित, शहरी और मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि की हैं, जिनकी स्वतंत्रता की अवधारणा अपेक्षाकृत संरक्षित और आत्मचेतस वातावरण से पोषित है। इसके कारण ग्रामीण, श्रमिक, दलित या वंचित वर्ग की स्त्रियों के आर्थिक और सामाजिक संघर्षों का प्रतिनिधित्व सीमित हो जाता है। साथ ही, कई कहानियों में आर्थिक स्वतंत्रता का स्वरूप अप्रत्यक्ष और संकेतात्मक रूप में ही उभरता है; स्पष्ट रूप से स्त्री के रोज़गार, वेतन भेदभाव, कार्यस्थल शोषण जैसे मुद्दों का गहराई से चित्रण नहीं मिलता। इससे शोध के आर्थिक विमर्श को स्थापन करने में व्याख्यात्मक चुनौतियाँ आती हैं।

इसके अतिरिक्त, उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों की संख्या सीमित है जो विशेष रूप से मन्नू भंडारी के कथा साहित्य को स्त्री सशक्तिकरण के आर्थिक पक्ष से जोड़कर विश्लेषित करते हों। फलस्वरूप, शोध को सैद्धांतिक आधार पर स्थापन करने में प्राथमिक स्रोतों पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है। साथ ही,

शोधकर्ता के लिए यह एक वैचारिक चुनौती होती है कि वह अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण और निष्पक्ष, तटस्थ अकादमिक मूल्यांकन के बीच संतुलन बनाए रखे।

इन सभी सीमाओं के बावजूद, मन्नू भंडारी की कहानियाँ स्त्री स्वतंत्रता की प्रक्रिया में आंतरिक संघर्ष, आत्मबोध, और चेतना के जागरण को प्रमुखता से प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि उनके साहित्यिक योगदान को वर्तमान स्त्री विमर्श के ऐतिहासिक विकासक्रम में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्वीकार किया जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी का कथा साहित्य स्त्री चेतना, आत्मस्वाभिमान और सामाजिक बदलाव की संवेदनशील अभिव्यक्ति है। उन्होंने अपने लेखन में स्त्री को केवल करुणा और त्याग का प्रतीक नहीं, बल्कि एक विचारशील, आत्मनिर्भर और संघर्षशील इकाई के रूप में प्रस्तुत किया। उनके पात्रों की विशेषता यह है कि वे किसी सामाजिक आंदोलन का हिस्सा भले न हों, परंतु उनके जीवन के छोटे-छोटे निर्णय समाज की स्थापित संरचनाओं को चुनौती देते हैं। आर्थिक सशक्तिकरण और स्त्री स्वतंत्रता मन्नू भंडारी की कहानियों में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अनेक स्तरों पर दिखाई देते हैं। इंदु, त्रिशंकु की नायिका, लाजवन्ती, और अकेली जैसी पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि स्त्रियाँ जब अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारती हैं, तब वे मानसिक और सामाजिक रूप से भी अधिक स्वतंत्र होती हैं। लेखक ने यह दिखाया है कि स्त्री की स्वतंत्रता केवल पुरुष-विरोध या विवाह-विरोध नहीं है, बल्कि यह उसके विकल्प चुनने की क्षमता और आत्मनिर्णय की चेतना से जुड़ी हुई है। मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में बदलाव की चेतना, सामाजिक रूढ़ियों पर प्रश्न, और स्वतंत्रता के विभिन्न आयामों की अभिव्यक्ति उन्हें स्त्री विमर्श की महत्वपूर्ण लेखिका बनाती है। यद्यपि उनके पात्र मुख्यतः शहरी और मध्यवर्गीय हैं, फिर भी वे एक वैचारिक क्रांति का संकेत देते हैं जो भविष्य की स्त्री के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। उनके साहित्य के माध्यम से यह सिद्ध होता है कि आर्थिक सशक्तिकरण केवल जीविकोपार्जन नहीं, बल्कि स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान की आधारशिला है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-3 | March-2025| Page 145-157

संदर्भ सूची

1. भंडारी, म. (1961). एक इंच मुस्कान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. भंडारी, म. (1972). यही सच है और अन्य कहानियाँ. नई दिल्ली: राजपाल एंड सन्स.
3. तिवारी, श. (2010). हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्श. इलाहाबाद: साहित्य भवन.
4. यादव, र. (2013). नारी चेतना और हिन्दी कथा साहित्य. जयपुर: साहित्यागार.
5. त्रिपाठी, र. (2015). आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन.
6. गुप्ता, मीरा. (2019). मन्नू भंडारी का कथा साहित्य: एक मूल्यांकन. हिन्दी विमर्श, (15), 44–52.
7. मिश्रा, वी. (2016). स्त्री अस्मिता और हिन्दी कथा साहित्य. वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ.
8. पांडेय, क. (2017). हिन्दी साहित्य में स्त्री के स्वर. दिल्ली: ज्ञान गंगा प्रकाशन.
9. Kumar, R. (1997). The History of Doing: An Illustrated Account of Movements for Women's Rights and Feminism in India. Kali for Women.
10. Sharma, A. (2002). Women in Indian Religions. Oxford University Press.